वि-व मंगल गौ ग्राम यात्रा में हुआ दो संस्कृतियों का मिलन

वैज्ञानिक ढंग से बताएं गाय की उपयोगिता - आचार्य महाप्रज्ञ

श्रीडूँगरगढ़ 25 दिसम्बर (-ुभकरण पारीक) : वि-वमंगल गौ ग्राम यात्रा के कस्बे में आगमन पर भारत की दो संस्कृतियों का मिलन देख लोग हर्श से फूले नहीं समा रहे थे। जब जैन धर्म के वि-वविख्यात आचार्य महाप्रज्ञ एवं :ांकराचार्य का मंच पर समागमन हुआ तो जैन संस्कृति एवं वैदिक संस्कृति की गूंज एक साथ सुनाई दी। स्थानीय तेरापंथ भवन के प्रज्ञासमवसरण मे उपस्थित वि-ाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि गाय की उपयोगिता पर वैज्ञानिक ढंग से प्रका-ा डाला जाना चाहिए। जो दया, करुणा और अहिंसा को आत्मसात कर चुका है वही इसकी रक्षा के लिए चिंतन करता है। वर्तमान में गाय पर ध्यान कम दिया जा रहा है और नकली दूध, घी का सेवन किया जा रहा है। जो अनेक बीमारियों को पैदा कर रहा है। इस यात्रा में गौ रक्षा का संकल्प दिलाया जाता है इसके साथ नकली दूध, घी से दूरी रखने का संकल्प हो और प्रत्येक घर में गाय रखने का विचार हो तो अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने :ांकराचार्य जी को करुणा-ील एवं सरल हृदय बताते हुए जैन वि-व भारती को देखने की ओर इंगित किया । उन्होनें बताया कि जैन वि-व भारती को आचार्य तुलसी ने कामधेनु बताया है। इसके वि-ाल परिसर के मध्य काम में वि-ाल कामधेनु को स्थापित किया गया है।

:ांकराचार्य ने कहा कि गौ माता की हत्या का समर्थन कोई भी धर्म नहीं करता हैं। इसका समर्थन करने वाला कोई राक्षस ही हो सकता है। उन्होनें कहा कि हमारा लक्ष्य मानवता से माधवता की ओर बढ़ाना है। जो दूसरों का बूरा करता है वह अपना ही बूरा करता है। उन्होनें राश्ट्र को आचार्य महाप्रज्ञ जैसे प्रज्ञावान महापुरुशों की जरुरत बताते हुए कहा कि या की जा रही है। लोगों की दृश्टि बड़ी बात हो सकती है परन्तु आज मेरे लिए इससे इससे भी बड़ी बात है महाप्रज्ञ जी जैस महायोगी से मिलना । इस यात्रा के कारण मे इनसे दो बार मिल चुका हूं इसलिए में परम्परा में गौचरी, गौश्ठी आदि अनेक :ाब्दों में गाय के वाचक :ाब्दों का प्रयोग होता है। प्राणीमात्र को अपने समकक्ष समझना चाहिए। उन्होनें ग्राम संस्कृति में न-ामुक्ति अभियान चलाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि न-े के कारण ग्रामीण उथान नहीं कर पाते हैं । आज गांवों में अल्प विकास के साथ न-ा मुक्ति पर बल देना भी जरुरी है।

श्रीडूंगरगढ़ के तेरापंथ भवन में वि-व गौ ग्राम या़त्रा के संवाहक गौकर्ण पीठ के :ांकराचार्य श्री राधवे-वर भारती एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ जनसमुदाय का सम्बोधित करते हुए